Q. दर्शन की परिभाषा दें तथा इसे आधुनिक दर्शन की विशेषताएँ बताएँ।

Ans— दर्शन की परिभाषा को लेकर पाश्चात्य तथा भारतीय दार्शनिकों में विभिन्न मत-मतान्तर देखे जाते हैं।

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार दर्शन का शाब्दिक अर्थ है Love of knowledge or Search for wisdom इस अर्थ के अनुसार दार्शनिक वह है जो सत्य की खोज या अनुसंधान करता है।

लेकिन भारतीय दार्शनिक के अनुसार दर्शन शब्द 'दृश्' धातु में 'ल्युट्' प्रत्यय जुड़ने से बना है जिसका अर्थ देखना है इसलिए भारत में दर्शन की परिभाषा 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' के रूप में दी जाती है अर्थात् जिस विद्या को देखा जाता है जिसके द्वारा सत्य का दर्शन हो। इसके अनुसार व्यक्ति वास्तविक सत्य जिसका जीवन अन्त को प्राप्त होता है तथा इस प्रकार की व्यक्ति के अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति करता है। जहाँ पर मोक्ष का अर्थ आत्मा का परमात्मा में अनुभव करना होता है। इसलिए दर्शन का तात्पर्य जो आत्मा को प्राप्ति कराए केवल दर्शन शास्त्र ही प्राप्त करा सकता है इसलिए शास्त्र में इसे प्राप्त की प्राप्ति माना गया है।

आधुनिक दर्शन की विशेषताएँ _____

आधुनिक दर्शन नवीन है। आधुनिक दर्शन के भिन्न-भिन्न प्रकार हैं भिन्न-भिन्न विद्वानों ने वर्गीकरण किया जाता है कुछ आस्तिक (Orthodox) हैं तो कुछ नास्तिक (Heterodox) किन्तु आधुनिक दर्शन में इन्हें विभाजित करना कठिन है क्योंकि आधुनिक दार्शनिक एक मत होकर इन्हें आधुनिक दर्शन

विशेषताएँ कई आधारों पर की जा सकती हैं।

(i) आधुनिक दर्शन का केन्द्र अस्तित्ववादी विचारक है। पुरातन को देखकर आधुनिक विचारों ने एक नवीन दृष्टिकोण का अनुसरण करते हैं। फलतः उनका दार्शनिक चिंतन आधुनिक होता है। आधुनिक विचारकों का मुख्य लक्ष्य मुक्ति को मुक्त दिलाना है। साथ ही मुक्ति अपने दर्शन में मुक्ति का वर्णन नहीं करते हैं अपितु उसे प्राप्त करने के साधन भी बताते हैं।

(ii) आधुनिक दर्शन मूलतः कर्मसिद्धान्त एवं पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं। मनुष्य अपने अतीत कर्म के अनुसार फल प्राप्त करता है। विश्वकल्याण मंगल या अपने कर्म का फल भोगने का विधान होता है। इसका विश्व एवं विश्व मंगल है तथा पुराने एवं नवीन मूल्यों का आवागमन जारी रहता है।

(iii) मानवीय को केन्द्रबिन्दु मानकर भारतीय दार्शनिक चिन्तन की ~~विशेष~~ दिशा में विशेष करते हैं।

(iv) आधुनिक दर्शन व्यावहारिक है।

(v) भारतीय भारतीय दार्शनिक दुःख का कारण अज्ञानता को मानते हैं। क्योंकि अज्ञानता के कारण ही व्यक्ति बंधनग्रस्त हो जाता है तथा दुःख भोगता है। अज्ञानता को ही दुःखों की जननी माना जाता है।

(vi) प्रायः भारतीय आधुनिक दार्शनिक मोक्ष की धारणा में विश्वास करते हैं तथा मोक्ष को ही जीवन का परम पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार करते हैं। दुःखरहित अवस्था को ही मोक्ष कहा गया है। कुछ आधुनिक विचारकों ने इस अवस्था को आनन्द अवस्था कहा है। मोक्ष को दो प्रकार बताते हैं- जीवन मुक्ति और विदेह मुक्ति। भारतीय आत्मा को जीवन मुक्ति कहा गया है। जीवन मुक्ति को सर्वोच्च मोक्ष माना गया है। मोक्ष को विभिन्न नामों से जाना जाता है। मोक्ष सर्वोच्च लक्ष्य माना गया है।

Scanned with CamScanner